Year : 13
Issue : 52 (Pt. II)
Jul- Sep. 2025
www.pramanaresearchjournal.com

ISSN : 2249-2976

Impact Factor : 7.158

(Art, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

Pramāna

Research Journal

Editor-in-Chief
Acharya (Dr.) Shilak Ram

Editor
Prof. Patan Rahim Khan

Acharya Academy, Rohtak
Haryana, Bharat
ISO 9001:2015

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 7.158

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :

Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

(An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

Year : 13
Issue : 52 (Pt. II)
Jul.-Sep. 2025
www.pramanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Rohtak, Haryana, Bharat

ISO : 9001-2015

© आचार्य अकादमी

लेजर टाईप सैटिंग
संजू चावला व रिंकू चावला
'वैब साईट कम्प्यूटर्स' थर्ड गेट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

मुद्रण

लाट प्रिंटिंग प्रैस
प्रताप चौक
रोहतक-124001

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक आचार्य (डॉ॰) शीलक राम द्वारा लाट प्रिंटिग प्रैस, प्रताप चौक, रोहतक से मुद्रित करवाकर आचार्य अकादमी,ग्रा.+पत्रालय चुलियाणा रोहज, जिला-रोहतक, हरियाणा (भारत) से प्रकाशित।
मुख्य संपादक : आचार्य (डॉ॰) शीलक राम, विशेषांक संपादक : प्रो. पठान रहीम खान

---

1. **'प्रमाण'** रिसर्च जर्नल में छपे शोध-आलेखां में प्रस्तुत दृष्टिकोण, सिद्धांत एवं विचारों से संपादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। इस हेतु शोधार्थी स्वयं जिम्मेवार होंगे।
2. **'प्रमाण'** रिसर्च जर्नल से संबंधित सभी पद अवैतनिक हैं।
3. **'प्रमाण'** रिसर्च जर्नल से संबंधित सभी विवाद केवल रोहतक न्यायालय के अधीन होंगे।
4. मंगवाये गये प्रारूप के अनुसार शोध-आलेख नहीं भेजने पर शोध-आलेख के प्रकाशन में हुई त्रुटि के लिए शोधार्थी/लेखक/शिक्षक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
5. **'प्रमाण'** रिसर्च जर्नल में प्रकाशित शोध-आलेख की किसी विश्वविद्यालय या संस्थान द्वारा स्वीकृति या अस्वीकृति के संबंध में प्रकाशक/संपादक की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

विशेषांक परामर्शदाता मंडल

संपादक

प्रो. पठान रहीम खान, पीएच.डी., डी.लिट्
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

प्रो. करन सिंह ऊटवाल
पीएच.डी, हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

प्रो. जी. वी. रत्नाकर
पीएच.डी, हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

प्रो. दोड्डा शेषु बाबु
पीएच.डी, हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

डॉ. अबू होरैरा
पीएच.डी, (अतिथि प्राध्यापक) हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

डॉ. ज़ैनब खान
पीएच.डी, (अतिथि प्राध्यापक), हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

डॉ. साहिबा ख़ातून
पीएच.डी, (अतिथि प्राध्यापक), हिंदी–विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

प्रूफ़ रीडर

मो. जुबैर अंसारी, शोधार्थी, हिंदी–विभाग, मानू, हैदराबाद

महफूज आलम, शोधार्थी, हिंदी–विभाग, मानू, हैदराबाद

शेख़ रुकसाना, शोधार्थी, हिंदी–विभाग, मानू, हैदराबाद

शाहिद अली, शोधार्थी, हिंदी–विभाग, मानू, हैदराबाद

- उर्दू के फरोग में सूफिया का किरदार
  मोहम्मदी फातिमा 107-111
- मध्यकालीन साहित्य–सूफी काव्य प्रवृत्तियाँ एवं स्त्रोत
  एन. हरि प्रसाद 112-115
- सूफी शब्द की उत्पति...उद्भव विकास..लक्ष्य सैद्धांतिक विश्लेषण
  डॉ. इम्रान शेख 116-120
- जायसी के 'पद्मावत' में प्रतीकात्मकता के माध्यम से सूफ़ी दर्शन
  लिना महादेव कदम 121-124
- सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत में प्रकृति–चित्रण का महत्व
  डॉ. एम. मधुकर राव 125-128
- भक्ति आंदोलन में संत काव्य धारा और सूफीवाद का योगदान
  मोहम्मद शफ़ी 129-132
- सूफ़ीकाव्य की प्रासंगिकता
  डॉ. ख़ाज़ी एम.के. 133-137
- हिंदी साहित्य में सूफी कवियों का योगदान
  नेक प्रवीन 138-142
- हिंदी सूफी काव्य में प्रेम का स्वरूप
  डॉ० निज़ाम उद्दीन ख़ान 143-146
- भक्ति आंदोलन और सूफीवाद
  डॉ. पि.विजय कुमार 147-150
- भक्ति आंदोलन और सूफ़ीवाद
  'विद्यावाचस्पति' प्रसादराव जामि 151-153
- सूफी प्रेमगाथा काव्य के कवियों का अनुशीलन
  प्रोफ़ेसर पुष्पा रानी 154-157
- हिंदी का सूफी साहित्य
  रुबीना 158-161
- सूफी साहित्य का इतिहास एवं विकास
  शेक रुकसाना 162-164
- नूर मोहम्मद के काव्य में सूफ़ी चिंतन
  शाहिद अली 165-168
- हिंदी साहित्य में सूफी कवियों का योगदान (कुतबन, मंझन, जायसी के विशेष संदर्भ में)
  सोहेल 169-173
- मध्य कालीन हिंदी साहित्य और सूफी काव्य
  सोनिया 174-178
- हिंदी साहित्य में सूफ़ी काव्य परंपरा
  सोनिया विजय निर्मल 179-181
- पद्मावत में सूफी मतवाद का मानवीय प्रसंग
  सुभाश्री दास 182-185
- जायसी के पद्मावत में चित्रित प्रेम
  सुप्रिया देवीदास पवार 186-188
- हिन्दी साहित्य में सूफी कवियों का योगदान
  Dr. D Ananthalakshmi 189-193
- निर्गुण और सगुण कवियों का साहित्यिक फलक
  उमा देवी 194-199
- सूफी प्रेमाख्यानों में प्रतीकात्मकता
  डॉ. विशाल जैन 200-203

Pramāna
International Refereed & Peer Reviewed
Website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 7.158
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-13, Issue-52 (Pt. II)(Jul.-Sep. 2025) P. No. 186-188
E Mail Id : shilakram9@gmail.com

जायसी के पद्मावत में चित्रित प्रेम

सुप्रिया देवीदास पवार
शोध निर्देशक
डॉ. के. बी.भोसले
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रस्तावना: प्रेम एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है। अनेक विद्वानों ने प्रेम को अपने अंदाज में परिभाषित करने का प्रयास किया है। दंडी ने प्रेम को मानव मन का विकल्प मात्रा माना है। आ. शेखर लिखते हैं– "जिस भाव से उत्पन्न होते पर वह व्यक्तियों का मन, विचार, संशय आदि भावों से शून्य हो जाता है, जिससे आनंद का स्रोत बहने लगता है वह प्रेम भाव कहलाता है"[1] वास्तविकता में जब मन, विचार और संशय आदिभावन से शून्य होता है यानी इंसान प्रेम के जाल में समेट जाता है। इसलिए प्रेमचंद कहते हैं कि– "प्रेम सीधी–सादी गउ नहीं, खूंखार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आंख भी पढ़ने नहीं देता।"[2] और यही प्रेम जब सूफ़ी काव्य में प्रवाहित होता है तो इंसान को निर्गुण भक्ति की साधना का सफ़ा साधन बन जाता है। इस प्रेम रूपी साधन से आध्यात्मिक भाव–बोध के साथ ईश्वर की प्राप्ति होती है यह स्पष्ट हो जाता है। प्रेम से समर्पण भाव की ही भावना ईश्वर प्राप्ति का अंतिम सुख प्रदान करती है।

भक्तिकालीन काव्यधारा के निर्गुण काव्यधारा की एक महत्वपूर्ण प्रेमाश्रयी काव्यधारा का प्रभावात्मक साहित्यिक रूप यानी 'सूफ़ी काव्य' कहा जाता है। साधारणतः इसका सही काल निश्चित मानना कठिन है। 14वीं और 18वीं शती में यह सूफ़ी काव्य साहित्य में उभरकर आया। जिस साहित्य में साहित्यकारों ने भारतीय लोक कथाओं और प्रेम कहानियों का प्रयोग किया है। इसमें प्रेम का महत्व ईश्वर की साधना के बारे में प्रस्तुत किया गया है। प्रेम तो नायक–नायिका प्रदान आख्यायिका के रूप में है। लेकिन इस माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम का रूप दिखाने का काम सूफ़ी काव्य ने किया है। निर्गुण निराकार ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग है। यह प्रेम रहस्यवादात्मक भावना से उजागर सूफ़ी काव्य करता है। जिसमें कभी ईश्वर के साथ व्यक्तिगत अनुभव व्यक्त किया है। सूफ़ी काव्य से मानवीय प्रेम और आध्यात्मिक प्रेम दोनों को कवि व्यक्त करने का प्रयास करके निर्गुण ईश्वर को मानकर उसकी प्राप्ति प्रेमभाव से होती है यह सामने रखना चाहते हैं। प्रेम ईश्वर प्राप्ति का एक साधन है। प्रेम एक समाज, संस्कृति और दर्शन का भी एक दस्तावेज है जो सूफ़ी साहित्य से नजर आता है। वैसे तो प्रेम का भाव ही भक्ति की धारा को ज्यादा प्रवाहित करता है। यही प्रेम धारा सूफ़ी काव्य में दिखाई पड़ती है जो मानवीय जीवन को अत्यंत आवश्यक है।

संपूर्ण जगत प्रेम का क्षेत्र है। जगत का निर्माण प्रेम के आधार पर हुआ है। प्रेम ऐसा भाव है जो सभी जगह स्थित साधना का सही रूप प्रेम है। प्रेम सुंदर है, प्रेम सत्य है, सत्य का आधार ही प्रेम है । सूफ़ी कवि मलिक मुहम्मद जायसी संसार में प्रेम को महत्वपूर्ण मानते हैं। यही साधन रहस्यवाद के साथ आत्मा और परमात्मा का मिलन करता है। इसी प्रेम का आस्वाद लेना अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य अगर प्रेम से दूर जाता है तो वह मनुष्य, मनुष्य नहीं बल्कि एक पत्थर है। जो प्रेम की धारा में रहता है वह अपने जीवन की परवाह नहीं करता। ज्ञान के आधार पर प्रेम मार्ग पर चलता है उसे किसी मुहूरत की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने जीवन प्राण की भी परवाह नहीं करता। उसके शरीर में अब वह जान नहीं रही थी जैसे जायसी कहते हैं–

"पेम पथ दिन घरी न देखा। तब देखै जब होइ सरेखा।।
जेहि तन पेम कहां तोही मांसू। कया रकत न नयनन्ही आंसू।।

पंडित भूलान न जानै चालू। जीउ लेत दिन पूंछ न कालू।।"[3]

इस तरह जिसके शरीर में वह हर समय में प्रेमदृप्रेम में ही रहता है। प्रेम को समय बांध नहीं सकता। प्राण लेते समय मृत्यु समय नहीं देखती ,प्रेम भावना जागृत होने के लिए समय की आवश्यकता नहीं होती है, जो प्रेमपथ पर चलता है उसमें हमेशा वह जागृत होता है। प्रेम ईश्वर की प्राप्ति का साधन है। जब व्यक्ति परमात्मा के भक्ति में लीन हो जाता है तो वह अपने अस्तित्व को खो देता है। जिस तरह इंसान भगवान की प्रीत में लीन हो जाता है उसकी अवस्था एक भंवरे की तरह हो जाती है। भंवरा कुमुदिनी पर बैठा है कमल पर नहीं। भंवरा इसका मर्म जानता है इस मर्म पर जाने से खुद कुमुदिनी की पंखुड़ियां मिट जाने पर वह खुद जान गंवा बैठेगा यानी उसमें लीन हो जाएगा। इसलिए यह प्रेम का मार्ग जितना आसान उतना ही कठिन है। इसलिए जायसी पद्मावत में भोगविलास को छोड़कर योगविलास में सुख की प्राप्ति हो सकती है ऐसा कहते हैं–

"सुनै कहा मन समुझकहु राजा। करत पिरीत कठीण है काजा।।
तुम्ह अब ही जेई घर पोई। कँवल ने बैठी बैठ हहू कोई।।
जानाहि भंवर जो तोही पंथ लुटें। जीउ दीन्हा ओ दिए न घुटे।।"[4]

प्रेम का मार्ग कठिन है लेकिन साधन के रूप में वह सरल और साध्य है। प्रेम का रूप सागर जैसा विशाल है इसलिए जायसी लिखते हैं कि–

"पेम समुद जैस अवगाहा । जहाँ न वार पार नहि थाहा ।।
जौं वह समुद काह एहि परें । जौं अवगाह हंस होइ तिरें ।।
अब एहि समूँद परौं होइ मरा । पेम मोर पानी के करा ।।
मर होइ बहा कतहुँ लै जाऊ । ओहि के पंथ कोइ लै खाऊ ।।
अस मन जानि सहुँद महँ परऊँ । जौ कोइ खाइ बेगि निस्तरऊँ ।।"[5]

इसमें यह सामने आता है कि प्रेम समुद्र जैसा अगाध है। जिसका कोई किनारा नहीं है और जिसकी गहराई सामने नजर आती है इसके लिए इसमें हंस बनकर रहना ही आवश्यक है। जिस तरह पद्मावती के प्रेम में रत्नसेन भिखारी है उसे प्रेम की कोई सीमा नहीं रही है। वह पद्मावती के प्रेम में लीन हो चुका है जैसे कोई मश्त शरीर बन गया हो। मानो प्रेम में इंसान अपने आपका अस्तित्व खोकर प्रेम की धारा में बह जाता है। उसके मस्तक, धड़ और शरीर अलग–अलग जगह है। हृदय, प्रेम, सागर में लीन होता है। जो कौड़ील्लै पक्षी समुद्र में डूबकर उसकी बूंदे ऊपर उठाता है उसी बूंद को लेकर वह आंसू के रूप में बहता है। प्रेम में लीन होना जैसे खुद प्रेममय होकर प्रेम की सीमा में खो जाना जिसकी कोई सीमा ही नहीं रहती।

प्रेम एक शांति है, प्रेम से ही शांति की प्राप्ति होती है। प्रेम जीवन का सार है।

"दधि समुद्र देखत मन डहा। पेम क लुबुध दगध पै सहा।।
पेम सों दाधा घनि वह जीऊ। दही माहिं मथि काढ़े घीऊ।।
स्वाँस दहेंड़ि मन मँथनी गाढ़ी। हिएँ चोट बिनु फूट न साढ़ी।।
जेहि जिय पेम चंदन तेहि आगी। पेम बिहून फिरहिं डरि भागी।।
पेम की आगी जरै जों कोई। ताकर दुख न अँबिरथा होई।।
जो जानै सत आपुहि जारै। निसत हीएं करै न पारै।।
दधि समुद्र पुनि पार मे पेमहि कहाँ सँभार।।
भावै पानी सिर परौ भावै परौ अँगार।।"[6]

दूध से दही बन जाता है। दही के समुद्र को देखकर मन में जल जाता है। लेकिन प्रेम का लुभाया मन वह जलन की दाह सह लेता है। मानवी शरीर दही से भरा हुआ है जिसका मंथन करने से प्रेम का घी निकलता है। जिसके मन में प्रेम है उसके लिए आग चंदन की भांति शीतल होती है। लेकिन जो प्रेम से सूने हैं वह आग से डर कर भागते हैं। जो कोई प्रेम की आग में जलता है उसका दुख व्यर्थ नहीं जाता। जो सत्य को जानता है वह अपने

को जलाता है। निः सत्व (निर्बल) है वह सत्य का पालन नहीं करता। जो लोग दही के समुद्र को पार करते हैं, वहां सावधानी को स्थान नहीं दिया जाता। चाहे सर पर पानी पड़े या चाहे अंगारे । यानी प्रेम शांति का प्रतीक है जो जीवन में विरह की आग से उत्पन्न होता है और मिलन से इस आग को बुझाकर शांति की धारा में बहा ले जाता है।

प्रेम एक ऐसा खेल है, वह यौवन का रसपान करने वाला भंवरा जिसमें आता है और रसपान करता है। इस कारण यौवनरूपी तूरंग की बाग से अपने हाथ में रखनी चाहिए। यौवन मतवाले हाथी के समान होता हैं उस पर ज्ञान के विचार से अंकुश पाया जाता है इस कारण पद्मावती को कहा जाता है कि–

"अचहि बारि तू पेम न खेला । का जानसि कस होइ दुहेला ।।
गैंगन दिस्टि करु जाइ तराहीं। सुरुज देखि कर आवै नाहीं ।।
जब लगि पीउ मिलै तोहिं साधु पैम के पीर।।
जैसें सीप सेवाति कहँ तपै सहुँद मँझ नीर।।"[7]

प्रेम कठिन खेल है, प्रेम का खेल पद्मावती तूने अभी नहीं खेला तो तुम्हें कैसे पता चलेगा कि यह खेल कठिन है? दृष्टि जिस तरह आकाश की तरफ करो वह जमीन पर ही आती है सूरज को हाथ में लिया नहीं जा सकता उसे कितना भी जी भर देख लो। उसी तरह जब तक विरह में था नहीं समझ में आती, प्रियतम नहीं मिलता तब प्रेम की व्यथा समझ में आती है। जिस तरह सीप स्वाति के लिए समुद्र जल में लगता है इस तरह प्रियतम या ईश्वर को पाने के लिए विरह यथा में तपना आवश्यक है।

ऐसा प्रेम का रूप ज्ञान दिखाकर 'मंडप गमन खंड' में राजा को सामने रखकर पद्मावत में प्रेम का वर्णन ऐसा किया है।

कै अस्तुति जौं बहुत मनावा। सबद अकूट मैंडप महँ आवा ।।
मानुस पेम भएउ बैकुंठी। नाहि त काह छार एक मूँठी ।।
पेमहि माहँ बिरह औ रसा। मैन के घर मधु अंबित बसा।।"[8]

यानी मनुष्य प्रेम द्वारा ही स्वर्ग के योग्य बना है नहीं तो इसमें है ही क्या? केवल एक ही मुट्ठी राख है। प्रेम में विरह और रस दोनों है। जीवन में, मन में सत्य का भाव हो तो ईश्वर भी उसकी सुनता है। यानी भगवान जो जानते हैं बहुत कठिनता में, प्रेम पाना अनुकूल बन जाता है।

निष्कर्ष

पद्मावत में प्रेम वर्णन एक प्रतीकात्मक भाव से किया गया है। प्रेम एक आध्यात्मिक ईश्वर प्राप्ति का साधन है। जो रहस्यवाद से जुड़ा है, पत्थर मनुष्य में प्रेम भावना जागृत होने से वह विरह की व्यथा भी जान सकता है। प्रेम एक आत्मसमर्पण है, भक्ति के रूप में वह आत्मसमर्पण ईश्वर प्राप्ति के लिए है। प्रेम एक साधन है जो शांति का प्रतीक है। विरह की दाह बुझाता है और मन से मन को मिलाकर ईश्वर प्राप्ति का आनंद, सुख देता है। प्रेम भाव में ही जीवन का रस है जो सूफी काव्य का ज्ञान प्रवाह बना है इस तरह प्रेम वर्णन सूफी काव्य की विशेषता बनी है।

संदर्भ

1. गणपति चंद्र गुप्त 'हिंदी काव्य में श्रृंगार परम्परा 'और महाकवी बिहारी; प्रथम संस्करण 1959, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा प्रकाशन, पृ.. 46
2. प्रेमचंद'गोदान'pdf-hindustanbooks-com
3. वासुदेव शरण अग्रवाल 'पद्मावत' मलिक मुहम्मद जायसी कृत महाकाव्य (मूल और संजीवनी व्याख्या), संस्करण 2007, साहित्य सदन प्रकाशन झाँसी, पृ. 123
4. वही, पृ. 119
5. वही, पृ. 138
6. वही, पृ. 146
7. वही, पृ. 159
8. वही, पृ.164